इन्टरव्यू १९

प्र: आपका नाम क्या है ?
ज: मेरा नाम खुर्शीद है।

प्र: आपकी उम्र कितनी है ?
ज: मेरी उम्र 18-19 साल है।

प्र: कब से बुनकारी कर रहे हैं ?
ज: करीब 10 साल से।

प्र: यानी आठ साल की उम्र से कर रहें हैं ?
ज: हां, पहले बेल बूटा कढ़ाते थे फिर बुनना आ गया बिने भी और फिर बाहर बिनवाये भी लेकिन उसके बाद हमारा खुदे काम बिगड़ गया।

प्र: क्यों ?
ज: जैसे साड़ी बेच रहे हैं कारीगर गायब हो गया कारीगर को मजूरी दूना है अब दो हजार का माल 800 में बेचे। वो भी 800 कारीगर को दे दिये तो हमारे पास तो कुछ नहीं बचा ना। इसलिए हमारा काम बन्द हो गया।

प्र: आपका अपना करघा था क्या ?
ज: हां, हमारा अपना मकान था शहर में अब गांव में रहना पड़ रहा है।

प्र: कितना करघा था ?
ज: 10-12

प्र: तो क्यों गांव आना पड़ा ?
ज: उसी तरह नूकसान हो गया काम बंद हो गया तो धीरे-धीरे सब खत्म हो गया। अब कोई बैठ के तो खा नहीं सकता। घर का एक हिस्सा तो बेचकर खा गए। पहले शहर में दशाश्वमेध के साइड में मकान था एक बिस्सा में अब गांव में आधा बिस्सा में है।

प्र: घर में कौन-कौन हैं ?
ज: दो तीन भाई है, तीन करघा है उसी पर बिनते हैं उसी से खर्चा चल रहा है तो हम एकदम बिनना छोड़ दिए हैं। हम तो बाहर काम कर रहे हैं, वो भी ठिक तरीके से चल नहीं रहा। उसी से हजार रुपया मिलता है महीने में।

प्र: क्या काम कर रहे है ?
ज: डाई का काम, वो भी ठीक से चल नहीं रहा।

प्र: उसमें क्या रंगने को लोग देते हैं ?
ज: नहीं हम वहीं जा कर मजूरी करते हैं। रंगते है उन्हीं का। माल उनकों मिलता है जो हम जा करके रंगते हैं गैस-वैस जलाते हैं। उसमें भी पड़ता नहीं है।

प्र: कितना मिलता है महीना का मिलता है कि रोज का ?
ज: महीने का एक हजार रुपया मिलता है।

प्र: और उसमे चाहे जितना काम आये तो भी उतना ही ?
ज: हां।

प्र: कम ज्यादे कुछ भी हो ?
ज: रात-रात भर काम किए है 48 घण्टा तक चूल्ले पर खड़े हो कर काम किए हैं। तो उसका पैसा ही नहीं मिला।

प्र: क्यों ?
ज: जब काम का नागा होता है मतलब काम नहीं मिलता तो उसका तो करना ही है।

प्र: दो चार दिन यदि काम ना हो ता पूरा मिलेगा या कटके मिलेगा ?
ज: कटता नहीं है पूरा मिलेगा क्योंकि जब काम आयेगा तो रात भर काम करना भी होगा।

प्र: आप जो बता रहे कि इधर-उधर घुमना पड़ा ?
ज: फायदा तो इसी में है कि बंधा बधांया तनख्वा मिलता है- फायदा क्या है एक हजार में किसी का महीना चलता है। पहले हम बिनवाते थे तो 500 रुपया हफ्ता हमारा जेब खर्च था आज एक हजार में महीना में अपना चला रहे हैं तो अब कितना खराब हो गया। पहले गाड़ी थी आज साइकिल भी नहीं है। ये सरकार जब से बैठी है तभी से से मकान बेचे हैं। कोई भी सरकार आती है तो तरक्की होती है। सरकार तो हम लोगों के बारे में एकदम नहीं सोचती कोई भी सरकार को हम अच्छा नहीं मानते। एक दूसरे की बुराई हरा कोई करता है लेकिन हम किसी की अच्छाई क्या करें।

प्र: आपके पिता के समय स्थिति ठीक थी ?
ज: हां पिता जी के समय तो बहुत काम बिनवाते थे। वो तो एकदम छोड़ दिए कुछ नहीं करते।

प्र: बूढ़े हो गए हैं ?
ज: अरे उनके उम्र का आदमी तो करोड़ो रुपया कमा रहा है।

प्र: फिर क्यों बैठ गए ?
ज: जब स्थिति खराब हो गई मकान बेचना पड़ा, कारीबर को देना पड़ा, कर्जा हो गया तो वो क्या करेंगे जब हमारे लायक कुछ बचा ही नहीं तो झूठ बोलना पसंद नहीं करते हम लोग तो एकाध परसंट झूठ बोल लेते है ना बोले तो काम ही नही चलेंगे।

प्र: कितने का कर्जा हुआ ?
ज: ढाई तीन लाख रुपये।

प्र: कैसे चुका रहे हैं ?
ज: मकान बेच कर चुका दिए।

प्र: आपकी शादी हो गई ?
ज: नहीं।

प्र: भाईयों की ?
ज: एक भाई की हो गई है वो अलग रहते हैं।

प्र: कितने लोगों का खर्च चलता है आपका ?
ज: 10 लोगों का।

प्र: कितने भाई हैं आप ?
ज: सात भाई हैं।

प्र: सब मिलकर कितनी आमदनी हो जाती है ?
ज: सबका मिलकर चार हजार महीना होती है।

प्रः और खर्च कितना होता होगा ?
जः खर्च समझलिए की बहुत ज्यादा है।

प्रः काम करने वाले कितने हैं ?
जः बस तीन, हमें लेकर।
(कैसेट नंबर 2 खत्म)

(कैसेट संख्या 3 आरम्भ) कैसेट नंबर 2 का खुर्शीद के इन्टरव्यू का बाकी अंश स्थान बजरडीहा।
जब डाई हम सीख लेंगे अपना कारखाना खोलेंगे, अपना खोलेंगे तो हो सकता है ज्यादा तरक्की हो, इसलिए हम बिनाई छोड़ दिये हैं। अब उसमें भी देख रहे हैं...धीरे-धीरे बेस मंहगा हो जा रहा है, डाई करने में बेस लगता है पहले हम 100 का लाते रहे, 100 का लाते रहे, पर अब 200 का हो गया है, इसमें की मतलब खर्चा तो ज्यादा है, मजूरी मिलती वही है, हम लोगों को खोलने के लिए भी तो 50,60 हजार रुपये की जरूरत होगी, कारखाना खोलने के लिए, सामान भी तो लगेगा, इसलिए हम कारखाना खोलेंगे, लोन अगर सरकार हमको देती है तो फायदा है, जल्दी से कारखाना खुल जाय। इसमें तो 10 साल 20 साल मेहनत लग जाता है, इतना पैसा जुटाने में। बहुत मतलब मेहनत करेंगे तब 10 साल में 20 में हो जायेगा, अभी वहां से भी अगर नौकरी छुट गयी तो हम चोरी-चमारी तो करेंगे नहीं, उसमें तो अन्दर जाना पड़ेगा... हमसे चोरी-चमारी नहीं होगी, इसलिए हम लोग दूसरे जगह नौकरी करेंगे। आप ही बताइये हम क्या करें। 50-60 हजार भी जरूरत है। सरकार तो खाली भाषण में लोन देती है। कि बुनकर को दश-दश हजार लोन मिले जाए 50 हजार मिलेगा.....देती तो नहीं है खाली बोल देती है।
अवरोध (अन्य) हां ओर क्या
नाराजगी भरी एक महिला की आवाज- दिन भरे खटे, ऊपर से खाने में... दू टैम खाओ, एक टैम भुजाओ... चार ठो बाल बच्चा है, दुपहर हो तों कह थे अम्मा भूख लगल हौ, बेटा सबर करौ साम दोई न...
पुरूष- देखिये क्या हाल हो गयी हम लोगों की। पहले यही सब बनारसी साड़ी पहनती थी, अब देखियें क्या पहन रही हैं।
महिला- वक्त हौ, का बदल जाय, मंहगाई के समय हौ, कमाई वा नाही, चार ठे बाल बच्चा दाउते.....
अन्य पुरूष- हम लोग का धंधा एकदम चौपट हो गया, मन नहीं लगता एकदम, खाली भागने-भागने को मन करता है, बहुत दुख है।